

विचार बिन्दु

यदि एक मनुष्य की उन्नति होती है तो सारे संसार की उन्नति होती है और अगर एक व्यक्ति का पतन होता है तो सारे संसार का पतन होता है।

—महात्मा गाँधी

रहन-सहन में बदलाव से उड़ रही है लोगों की नींद

रहन-सहन में तेजी से बदलाव से अब लोगों के लिए चैन की नींद सोना भी दुभर हो गया है। हालात यह हो गए हैं कि स्लीप सप्लीमेंट्स यानी की सुकून की नींद लेने के उपायों पर लोग खुलकर पैसा खर्च करने लगे हैं। देश-दुनिया में स्लीप सप्लीमेंट्स का कारोबार दिन दूनी-रात चौगुनी गति से बढ़ता जा रहा है। यह केवल हमारे देश के हालात ही नहीं हैं अपितु दुनिया के अधिकांश देशों में यह होने लगा है। लोगों को सुकून की नींद के लिए अब दवाओं या अन्य उपायों का सहारा लेना पड़ता है। कोई योगा की राह अपनाता है तो कोई नेचुरोपैथी तो कोई नींद की दवाओं के एडिक्ट होते जा रहे हैं। हालात यह हो गये हैं कि देश में करीब 12 फीसदी लोग स्लीप सप्लीमेंट्स का सहारा लेने लगे हैं। स्लीप सप्लीमेंट्स यानी कि नींद की उपायों का कारोबार 9 फीसदी से भी अधिक की विकास दर के साथ बढ़ रहा है।

हालांकि देश दुनिया में स्वास्थ्य जागरूकता और स्वास्थ्य पहली प्राथमिकता बनता जा रहा है। लोग स्वास्थ्य के प्रति गंभीर होने लगे हैं। कोरोना के बाद तो हालात और भी तेजी से बदले हैं। अब रिस्क तो कोई लेना ही नहीं चाहता। स्वास्थ्य जागरूकता और पहली प्राथमिकता में हेल्थ को रखना अच्छी बात भी है। यह होना भी चाहिए क्योंकि हमारे यहां तो कहा जाता रहा है कि पहला सुख निरोगी काया। व्यक्ति का मन और तन दोनों विकार रहित होने चाहिए। हांलाकि स्वास्थ्य के साथ ही अन्य प्राथमिकताओं ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। रात दिन तनाव ही तनाव। नौकरी का तनाव तो दूसरा आगे कैसे बढ़ जाए उसका तनाव, तो बच्चों के भविष्य को लेकर तनाव तो प्रतिस्पर्धा में दूसरे की देखादेखी प्राप्त करने का तनाव इस कदर हावी होता जा रहा है कि लोगों की नींद उड़ती जा रही है। चारों तरफ कुछ पाने की होड़, एकल परिवार, बच्चों के केरियर को लेकर चिंता, कम उम्र में ही मकान व अन्य साधनों को प्राप्त करने के लिए तनाव इस कदर दबाए हुए हैं कि कर्ज के बोझ, मानसिक बोझ, ऑफिस के काम का दबाव और फिर एकल परिवार के कारण स्ट्रेस रिलिज नहीं होने जैसे कारणों के चलते सुकून की नींद दूर की बात होती जा रही है। यह बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रही है।

नींद पूरी नहीं होने के कारण मानसिक तनाव के साथ ही चिड़चिड़ापन, कुंठा, शरीर का टूटना और इसके साथ ही शरीर अन्य बीमारियों का घर बन जाता है। दरअसल दिमाग में जब कुछ ना कुछ चलता रहता है तो वह तनाव का रूप ले लेता है और सोते-जागते वह बाते दिमाग में घूमती रहती है और इस कारण से या तो नींद आती नहीं या फिर सोते-सोते एकाएक नींद उचट जाती है और एक बार उचटने के बाद दुबारा नींद आये यह मुश्किल हो जाता है।

दरअसल स्वस्थ तन और मन के लिए नींद का पूरा होना जरूरी शर्त है। बल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि नींद पूरी होने से ताजगी आती है और व्यक्ति स्वयं खुद को हल्का या रॉ कहें कि तनाव रहित तरोंताजा महसूस करता है। होता यह है कि दिन भर की भागदौड़ और आजकल के टारगेट आधारित जोब के कारण तनाव तो इन बिल्ट होता जा रहा है। फिर गूगल ज्ञान और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी तनाव को कम नहीं कर पाता है बल्कि यों कहें कि यह तो तनाव का कारण ही बनते हैं। इसके चलते नींद पूरी नहीं हो पाती तो उसके लिए तरह तरह के उपाय करने को मजबूर होना पड़ता है। ऐसे में दुर्व्यसन लग जाते हैं वह अलग।

यही कारण है कि देश दुनिया में सुकून की नींद के उपचार के कारोबार में तेजी से इजाफा होने लगा है। जहां तक हमारे देश की बात है हमारे देश में 2410 करोड़ का केवल और केवल मात्र सुकून की नींद के लिए होने वाला कारोबार है। विश्लेषकों के अनुसार यह कारोबार देश में 9.55 फीसदी सालाना विकास दर के साथ बढ़ रहा है। चैन की नींद सोने के उपायों से जुड़े कारोबार की बात करें तो इसमें शांति से नींद पूरी होने के लिए दी जाने वाली दवाएं, प्राकृतिक या नेचुरोपैथी, विभिन्न तरह की थैरेपीज, स्ट्रेस मैनेजमेंट की क्लासेज और इसी तरह के उपाय, योगा आदि से सुकून की नींद में सहायक बन रहे लोग देखा जाए तो चांदी कूट रहे हैं। यह धंधा ऐसा है कि लोगों को मजबूरी में किसी ना किसी की शरण तो लेनी ही पड़ती है। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि नींद पूरी नहीं होने के कारण मानसिक तनाव के साथ ही चिड़चिड़ापन, कुंठा, शरीर का टूटना और इसके साथ ही शरीर अन्य बीमारियों का घर बन जाता है। दरअसल दिमाग में जब कुछ ना कुछ चलता रहता है तो वह तनाव का रूप ले लेता है और सोते-जागते वह बाते दिमाग में घूमती रहती है और इस कारण से या तो नींद आती नहीं या फिर सोते-सोते एकाएक नींद उचट जाती है और एक बार उचटने के बाद दुबारा नींद आये यह मुश्किल हो जाता है।

दरअसल चैन की नींद नहीं आना या फिर नींद पूरी नहीं होना अब गंभीर रूप लेती जा रही है। इसमें बहुत कुछ भागम भाग की जिंदगी, रहन-सहन में बदलाव और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा ऐसे प्रमुख कारण हैं जो प्रभावित कर रहे हैं। समाज विज्ञानियों और मनोविज्ञानियों को अधिक गंभीर होकर के इस पर अध्ययन और निदान खोजना होगा। क्योंकि दवा या अन्य सप्लीमेंट कोई समाधान नहीं है यह हमें भली प्रकार से समझ लेना होगा।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल शनिवार 4 मई, 2024

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2081, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र रात्रि 10:07 तक, ऐन्द्रयन योग दिन 11:03 तक, बव करण दिन 10:02 तक, चन्द्रमा सांय 4:38 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक-मेघ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज त्रिपुच्छर योग रात्रि 8:39 से रात्रि 10:07 तक है। आज वरुधनी एकादशी व्रत, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:28 से 9:07 तक, चर 11:24 से 2:02 तक, लाभ-अमृत 2:02 से 5:14 तक। राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:50, सूर्यास्त 6:57

मेघ	सिंह	धनु
आर्थिक/वित्तियामामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्ति होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यार्ध परचात घर-गृहस्थों के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।	परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवर्तनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यार्ध परचात श्रम चद्र शुभ नहीं है।	परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। परिवर्तनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यार्ध परचात श्रम चद्र शुभ नहीं है।
वृष	कन्या	मकर
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	स्वास्थ्य में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।	आर्थिक कार्यों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित खोले से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।
मिथुन	तुला	कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशवासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के लिए दिन ठीक नहीं है। आवश्यक कार्यों में विनय हो सकता है। दिन के मध्यार्ध परचात धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।	घर-परिवार में अतिथियों का आमगन बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण तनाव बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	घर-गृहस्थों के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का स्थान रखें। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

मानवीय चेतना: क्या हम इसे जान सकते हैं?



डॉ. रामावतार शर्मा

उन्नीसवीं सदी में जन्मे पश्चिमी दार्शनिक जॉर्ज हेजल ने मानवीय चेतना के बारे में काफी कुछ लिखा है। हेजल के अनुसार जो कुछ भी प्रत्यक्ष है, स्पष्ट दृश्य है वह ही तार्किक है और उस पर ही बातचीत की जा सकती है। सत्य महान और जटिल तंत्र है जिसे हेजल ने पूर्ण (एम्ब्र्यो) कहा है जो या तो शत प्रतिशत है या फिर नहीं है। इसी तरह हेजल का मानना था कि मन या आत्मा ही अंतिम सत्य है। मन की एक चिर विस्तारित (एवर एक्सपैंडिंग) चेतना

होती है और दर्शनिकता हम में स्वयं की जागरूकता पैदा करती है जिसके द्वारा हम पूर्ण का अहसास कर पाते हैं, तर्क विहीनता से दूर हो सकते हैं और अर्धज्ञान के विरोधाभासों से अपने आप को मुक्त कर सकते हैं। अब यह सब पढ़ने और बोलने में तो अत्यंत सरल लगता है पर इसे व्यवहार में लाना अति कठिन या यूं कहा जाए कि बिना दृढ़ इच्छा के असंभव-सा ही। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि सदियों पहले भारतीय उपमहाद्वीप में महावीर ने चेतन जीवन जीने का महत्वपूर्ण संदेश दिया था पर वह परंपराओं और आडंबरों की भीड़ में कहीं खो गया। उधर गौतम बुद्ध के उपदेश भी करुणा एवम् तर्क पर आधारित थे परंतु वे भी समय की धूल से धुंधले हो गए। बुद्ध और महावीर की बातों का मर्म गिने चुने लोग ही पकड़ पाए।

चेतना को हर समय जागृत रखने के लिए व्यक्ति को हर पल चैतन्य अवस्था में रहना पड़ता है। चेतना या आत्मा किसी वस्तु को तरह प्राप्त थोड़े

ही की जा सकती है, यह तो बस महसूस की जाती है। बुद्धिमत्ता, ज्ञान और आत्म संवाद की तार्किक कसौटी द्वारा ही इस अहसास तक पहुंचा जा सकता है जहां स्वयं के अहंकार को पूर्ण रूपेण स्वाहा करना पड़ता है। यह सब घर परिवार और समाज के बीच रहते हुए करना पड़ता है। यदि जीवन से दूर रहे और ज्ञानी बन भी गए तो जीवन की जटिलताओं का अहसास भला कैसे होगा ?

चेतना को विज्ञान द्वारा नहीं समझा जा सकता है क्योंकि विज्ञान वस्तुपरक (ऑब्जेक्टिव) है जबकि चैतन्य होना एक आत्मपरक (सब्जेक्टिव) स्थिति होती है। इसके बावजूद भी वैज्ञानिकों ने चेतना के तीन आयाम स्थापित किए हैं। पहला आयाम है जागृति या शारीरिक उत्तेजना। दूसरा है जहां मस्तिष्क अवधारणाओं को निर्मित करता है। तीसरा पक्ष जटिल विचारों, मान्यताओं, अनुभवों, सूचनाओं और ज्ञान को मस्तिष्क द्वारा इस प्रकार बुनना होता है जहां से चेतना का आभास किया जा सके। चूंकि यह सब

व्यक्तिपरक होता है इसलिए मन और चेतना का स्पष्ट रूप से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इसीलिए विचारकों ने अपने हिसाब से बहुत कुछ लिखा है पर स्पष्ट भेद कोई बता नहीं सका है। ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि भेद शायद हो ही नहीं। व्यक्तिगत अनुभव और शब्दों का उपयोग ही शायद असमंजस का कारण हो।

मानव मस्तिष्क के अंदरूनी भाग में थालमस नामक अंग होता है जिसे एक तरह से संचार तंत्र का रिले स्टेशन कहा जा सकता है। यहाँ से सारी भावनाओं का संचार पूरे मस्तिष्क और शरीर की हर नर्व कोशिका में होता है। मस्तिष्क के बाहरी भाग में कोर्टेक्स नाम का हिस्सा होता है जहां से स्वयं के बारे में चेतना और मन की वाचालता उत्पन्न होती है।

थालमस और कोर्टेक्स अनगिनत तंतुओं से जुड़े होते हैं जो हजारों तरह के कार्य करते हैं। इन्हीं कार्यों में एक चैतन्य अवस्था प्राप्त करना है। इस अति

जटिल तानेबाने के अंदर से यह समझना शायद असंभव ही होगा कि चैतन्य अवस्था का उदय कहां से होता है। मानवीय चेतना न्यूरोलॉजी की बजाय दर्शन शास्त्र एवम आध्यात्मवाद द्वारा ही समझी जा सकती है जैसा कि क्रांतिकारी विचारक कबीर ने सदियों पहले कह दिया था।

“ज्यों गुंगे की सैन को, गुंगा ही पहिचान

त्यूं ज्ञानी के सुक्ख को, ज्ञानी होय सो जान”।

हालांकि सहमति संभव नहीं है पर हो सकता है आत्मा मन का ही विस्तार हो। माना कि मन द्वंद में रहता है पर आत्मा की आवाज भी समय और स्वार्थ के अनुसार बदलती रहती है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो चैतन्य मन ही जीवन को जीने और समझने के लिए पर्याप्त है, प्रायः है, ज्ञानी का ज्ञान है जो जात जात लोगों द्वारा देखा समझा जा सकता है।

—डॉ. रामावतार शर्मा,

(चिकित्सक एवं लेखक)

अधीनस्थ राजस्व न्यायालयों के श्रेष्ठ निर्णयों का मूल्यांकन होगा : राजेश्वर सिंह

सर्वश्रेष्ठ चयनित निर्णय पर होगा राज्य, संभाग एवं जिला स्तर पर सम्मान

अजमेर, (निस)। राजस्व मंडल की ओर से राजस्थान के विविध अधीनस्थ न्यायालयों की ओर से जारी होने वाले निर्णयों का गुणात्मक रूप से मूल्यांकन कर श्रेष्ठता के आधार पर संबंधित पीठासीन अधिकारियों को पुरस्कृत किया जायेगा। राजस्थान के अध्यक्ष राजेश्वर सिंह के निर्देशानुसार इस नवाचारी कदम का मुख्य उद्देश्य राजस्व न्यायालयों में उत्कृष्ट, गुणवत्तापूर्ण एवं विधिसम्मत निर्णय लेखन की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है। राजस्व मंडल के अध्यक्ष ने बताया कि राज्य के अधीनस्थ न्यायालयों की ओर से विगत 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च

2024 की अवधि में पारित निर्णयों में से पीठासीन अधिकारी के स्तर पर स्व मूल्यांकन करते हुए सर्वश्रेष्ठ निर्णयों को आगामी 5 जून से पूर्व राजस्व मंडल को भिजवाया जाएगा। मंडल को प्राप्त होने वाले निर्णयों का गठित समिति द्वारा समुचित मूल्यांकन किया जायेगा। मूल्यांकन के पश्चात श्रेष्ठता के आधार पर चयनित के लिए निर्णय देने वाले पीठासीन अधिकारी को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया जाएगा। राजस्थान के समस्त राजस्व न्यायालयों के पीठासीन अधिकारी उनके द्वारा पारित निर्णयों में से एक सर्वश्रेष्ठ निर्णय मय प्रमाणित प्रति के 5 जून तक राजस्व मंडल के ईमेल आईडी अथवा डाक के माध्यम से निबंधक, राजस्व मंडल, अजमेर को भिजवाया जाएगा। निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त निर्णयों को मूल्यांकन में शामिल नहीं किया जाएगा।



राजस्व मंडल अध्यक्ष राजेश्वर सिंह

पीठासीन अधिकारियों से प्राप्त निर्णयों के मूल्यांकन के पश्चात राज्य, संभाग एवं जिला स्तर से एक एक पीठासीन अधिकारी को सम्मानित किया जाएगा जिसमें राज्य स्तर पर

राजस्व मंडल के अध्यक्ष राजेश्वर सिंह के निर्देशानुसार इस नवाचारी कदम का मुख्य उद्देश्य राजस्व न्यायालयों में उत्कृष्ट, गुणवत्तापूर्ण एवं विधिसम्मत निर्णय लेखन की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है।

एक-संभागीय आयुक्त, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त एवं राजस्व अपील अधिकारी को सम्मानित किया जाएगा। इसी प्रकार संभाग स्तर पर एक-एक जिला कलेक्टर एवं अतिरिक्त जिला कलेक्टर तथा जिला स्तर पर एक-एक उपखंड अधिकारी एवं सहायक कलेक्टर को सम्मानित किया जाएगा। राजस्व मंडल के सभी अधीनस्थ राजस्व न्यायालयों के पीठासीन अधिकारियों से इस मूल्यांकन एवं चयन प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा की गई है, जिससे उत्कृष्ट

गुणवत्तापूर्ण एवं विधि सम्मत निर्णय लेखन प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जा सके। ऐसे श्रेष्ठ निर्णयों को भविष्य में राजस्व मंडल की राबिग पुस्तिका में भी प्रकाशित किया जाएगा।

प्राप्त निर्णयों के मूल्यांकन हेतु समिति गठित राजस्व मंडल को अधीनस्थ न्यायालयों के पीठासीन अधिकारियों की ओर से भेजे जाने वाले सर्वश्रेष्ठ निर्णय के मूल्यांकन के आधार पर राज्य, संभाग एवं जिला स्तर पर अधिकारियों को सम्मानित करने के लिए एक समिति भी गठित की गई है।

आर.पी.एस.सी. : 16 मई से पुनः प्रारंभ होगा प्रतियोगी परीक्षाओं का दौर

अजमेर, (कास)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा मई-जून माह में 27 विभिन्न विषयों के लिए आयोजित की जाने वाली असिस्टेंट प्रोफेसर, लाइब्रेरियन एंड पीटीआई परीक्षा 2023 की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इस परीक्षा का प्रारंभ 16 मई से होगा, जो कि 2 जून तक चलेगा।

आयोग सचिव ने बताया कि इन परीक्षाओं के शुचिता पूर्ण आयोजन एवं डमी अभ्यर्थियों की संभावना रोकने के लिए आयोग द्वारा इस परीक्षा से अभ्यर्थियों की हैडरॉइटिंग का नमूना भी अटेंडेंस शीट पर लिया जाएगा। इसी तरह अटेंडेंस शीट पर

तैयारियों में में जुटा आयोग, अटेंडेंस शीट पर पर होगी स्पष्ट व बड़ी फोटो

आयोग द्वारा प्रश्न-पत्रों की सुरक्षा के संबंध में भी आवश्यक कदम उठाए गए हैं

अभ्यर्थी की स्पष्ट व बड़ी फोटो प्रिंट की जाएगी ताकि परीक्षा केन्द्र पर वीक्षकों द्वारा अभ्यर्थी की पहचान पूर्णतः सुनिश्चित करते हुए डमी अभ्यर्थियों को रोका जा सके। अटेंडेंस शीट पर लिखा जाएगा हैडरॉइटिंग का नमूना:- आयोग द्वारा जारी प्रवेश-पत्र के साथ अटेंडेंस शीट भी संलग्न होती है। इस शीट को परीक्षा केन्द्र पर वीक्षक अभ्यर्थी को पहचान कर स्वयं के, केंद्राधीक्षक एवं अभ्यर्थी के हस्ताक्षर करवाकर प्रवेश-पत्र से अलग कर केन्द्र पर जमा करे हैं। परीक्षा संपन्न होने के उपरांत यह अटेंडेंस शीट परीक्षा सामग्री के साथ आयोग को भेजी जाती है। परीक्षार्थी को अटेंडेंस शीट के निचले भाग में दिए गए स्थान पर अभिजागर की उपस्थिति में एक वाक्य लिखना होगा। इसके पश्चात अभ्यर्थी अपने हस्ताक्षर कर स्वयं के द्वारा लिखे गए

वाक्य की पुष्टि करेगा। आयोग द्वारा प्रश्न-पत्रों की सुरक्षा के संबंध में भी विभिन्न आवश्यक कदम उठाए गए हैं। अलग सुरक्षात्मक उपायों एवं परीक्षा के सुगम आयोजन के संबंध में 9 मई 2024 को अतिरिक्त महानिदेशक, पुलिस, एसओजी एवं एटीएस, जयपुर, जिला कलेक्टर, अजमेर व जयपुर, पुलिस आयुक्त जयपुर, पुलिस अधीक्षक अजमेर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं परीक्षा समन्वयक अजमेर व जयपुर, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (परीक्षा प्रभारी) पुलिस आयुक्त जयपुर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस नोडल अधिकारी अजमेर, संयुक्त

निदेशक स्कूल शिक्षा अजमेर व जयपुर तथा जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) अजमेर व जयपुर के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विचार विमर्श भी किया जाएगा। 27 विषयों के कुल 2033 पदों के लिए 182257 अभ्यर्थी पंजीकृत:- आयोग के मुख्य परीक्षा नियंत्रक आशुतोष गुप्ता ने बताया कि उक्त परीक्षा के तहत 27 विषयों के कुल 2033 पदों के लिए परीक्षाओं का आयोजन अजमेर एवं जयपुर जिला मुख्यालय पर निर्धारित कार्यक्रमानुसार किया जाएगा। परीक्षा के लिए 1 लाख 82 हजार 257 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए हैं।

मालपुरा में चरमराई सफाई व्यवस्था, जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे



मालपुरा शहर के रोडवेज बस स्टैंड के पास लगे गंदगी के ढेर से आमजन परेशान है।

मालपुरा, (निस)। सफाई कर्मचारियों को पालिका प्रशासन द्वारा बीते आठ माह से भुगतान नहीं करने के चलते सफाईकर्मी व घर-घर कचरा संग्रह वाहन चालकों द्वारा सफाई कार्य बंद कर देने से मालपुरा शहर की सफाई व्यवस्था चरमराई गई। शहर के मुख्य बाजार व रोडवेज बस स्टैंड सहित हर गली-मोहल्ले में लगे गंदगी के ढेर व स्वच्छ भारत अभियान के प्रति प्रशासन की सजगकता की पील खोल रही है। इतना ही नहीं पालिका द्वारा रखवाये गये कचरा पात्र ऑनरप्लो होकर बीच सड़क व आम रास्ते में फैलने से सांस लेना तो दूर राहगीरों का पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। मालपुरा

उपखण्ड मुख्यालय के एक मात्र रोडवेज बस स्टैंड पर पालिका प्रशासन द्वारा यात्रियों को छाया, पानी की सुविधा मुहैया करवाना तो दूर अब बस स्टैंड पर सफाई व्यवस्था तक सुचारु नहीं होने से व्यापारियों के साथ-साथ रोजाना हजारों की संख्या में बस स्टैंड पर पहुंचने वाले यात्रियों का गंदगी से उठती दुर्गन्ध से हाल-बेहाल है। बंद पड़े बुकिंग घर के पास लगे गंदगी के ढेर में दिनभर आवाग पशु व सूअरों को जमावडा लगा होने से महिला यात्रियों को व चिह्न नागरिकों को इन आवाग जानवरों का शिकार होना पड़ रहा है। जानवरों के आतंक से कई यात्री चोटिल भी हो चुके हैं। तो

यात्रियों के हाथ से बैग तक फाड़ रहे हैं। यह जानवर अब उनके जी का जंजाल बन गया है। शहर के मुख्य बाजार, नवीन मंडी, महावीर मार्ग, माणक चौक बाजार में बीच सड़क पर लगे गंदगी के ढेर व कचरे से ओवरफ्लो हुये नालों का गंदा व बदबूदार पानी बीच सड़क पर फैल जाने से आमजन परेशान है। एक और जहां केन्द्र व राज्य सरकार स्वच्छ भारत अभियान के नाम पर निकाय मे करोड़ों रूपये का बजट व कचरा संग्रह के लिये ऑटोकीपर सहित ट्रेक्टर एवं इलेक्ट्रिक वाहन उपलब्ध करा रहे हैं। लेकिन मालपुरा पालिका प्रशासन की घोर लापरवाही के कारण शहर की सफाई व्यवस्था बेपटरी हो रही है।

बाल विवाह रोकथाम के लिए कार्यक्रम आयोजित

सीकर, (निस)। बाल अधिकारिता विभाग सीकर चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 द्वारा अक्षय तृतीया, पीपल पूर्णिमा अब्दुल मुहूर्त के उपलक्ष में 10 मई तक सीकर जिले में बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान आयोजित कर रहा है। बाल अधिकारिता विभाग सीकर की सहायक निदेशक डॉ. गार्गी शर्मा के निर्देशन में चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 टीम ने कच्ची बस्ती बस डिपो में 50 से अधिक बच्चों एवं अभिभावकों, आंगनबाड़ी सेक्टर मीटिंग नेहरू पार्क सीकर में आयोजित कर 40 से अधिक बच्चों की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ राजकीय आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय में 150 से अधिक बच्चों को बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में बाल विवाह से बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत करवाया गया तथा बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में बताया गया एवं बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर डॉ. गार्गी शर्मा ने बताया कि इस दौरान आंगनबाड़ी सुपरवाइजर तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को बाल विवाह रोकथाम के लिए शपथ दिलवाई गई तथा जानकारी दी गई कि बाल विवाह

कार्यक्रम में बाल विवाह से बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत करवाया गया तथा बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी दी

में शामिल होने वाले हलवाई, पंडित, फोटोग्राफर, भारती, टेंटवाला, डी.जे. वाला एवं बाल विवाह में भागीदारी लेने वाले सभी को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के 2 साल की सजा का प्रावधान है, यदि कही भी बाल विवाह होता दिखाई दे तो इसकी सूचना तुरंत जिला प्रशासन या चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 दी जा सकती है। कार्यक्रम में उपस्थित चाइल्ड हेल्पलाइन जिला समन्वयक राहुल दानोदिया व कार्डेसियन राकेश चिरागिया, सुपरवाइजर सुनिता सैनी, केस वर्कर धर्मचन्द्र आदि मौजूद रहे। सहायक निदेशक डॉ. गार्गी शर्मा ने बताया कि बाल विवाह रोकथाम के लिए 24 घण्टे चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 कन्ट्रोल रूम संचालित है। बाल विवाह सूचना देने वालों की पहचान उजागर नहीं की जाती है।